National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 65-69
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**डॉ.एम. अब्दुल रजाक**
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
क्रिस्तु जयंती विश्वविद्यालय,
के- नारायणपुर, कोतनूर-पोस्ट,
बेंगलूरु, पिन - 560077

**Correspondence:**
**डॉ.एम. अब्दुल रजाक**
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
क्रिस्तु जयंती विश्वविद्यालय,
के- नारायणपुर, कोतनूर-पोस्ट,
बेंगलूरु, पिन - 560077

# मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में गांधी दर्शन के विचार

**डॉ.एम. अब्दुल रजाक**

"अपने देश या अपने शासक के दोषों के प्रति सहानुभूति रखना या उन्हें छिपाना देशभक्ति के नाम को लजाना है, इसके विपरीत देश के दोषों का विरोध करना सच्ची देश-भक्ति है।"

**- महात्मा गांधी**

**शोधसार :**

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के वह कवि हैं। जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना, मानवता, नैतिकता और सामाजिक सुधार को अपनी कविता का केंद्र बनाया। गांधी दर्शन भारतीय संस्कृति, नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक समग्र जीवन दृष्टि है। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, स्वावलंबन, समानता और सर्वधर्म समभाव को अपने दर्शन के मूल सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया। उनके अनुसार सत्य परमात्मा है और अहिंसा उसकी प्राप्ति का साधन। गांधी जी ने राजनीति को नैतिकता से जोड़ते हुए कहा कि समाज और राष्ट्र की उन्नति केवल बाह्य साधनों से नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और नैतिक अनुशासन से संभव है। उन्होंने ग्राम स्वराज, स्वदेशी, खादी और श्रम की प्रतिष्ठा के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा था। उनके विचारों में स्त्री सम्मान, अस्पृश्यता निवारण और सभी वर्गों के बीच सद्भावना की भावना निहित है। गांधी दर्शन का उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज का नैतिक पुनर्जागरण भी है। यह दर्शन आज भी विश्व को शांति, सद्भाव और मानवीय मूल्यों की दिशा प्रदान करता है। गांधी जी का यह जीवन-दर्शन मानवता के कल्याण और सार्वभौमिक एकता का प्रतीक है। 'भारत-भारती', 'साकेत', 'नारी', 'यशोधरा' जैसी रचनाएँ गांधी युगीन भारतीय समाज की नैतिक चेतना का सजीव दस्तावेज हैं। यह आलेख मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में गांधीवादी विचारधारा के विविध आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**बीज शब्द :** गांधी दर्शन, सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, ग्राम स्वराज, स्त्री समानता, अस्पृश्यता उन्मूलन, धार्मिक सहिष्णुता

**मूल आलेख :**

गांधी दर्शन भारतीय जीवन मूल्य, नैतिकता और आत्मिक साधना का ऐसा दर्शन है, जिसने न केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा दी, बल्कि विश्व मानवता को एक नई सोच भी प्रदान की। महात्मा गांधी ने अपने जीवन और विचारों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सत्य और अहिंसा केवल नैतिक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन की व्यावहारिक शक्तियाँ हैं। उन्होंने कहा-"सत्य ही ईश्वर है" और "अहिंसा परम धर्म"। गांधी जी के अनुसार मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी आत्मा है और आत्मबल के माध्यम से ही अन्याय, हिंसा और असत्य पर विजय प्राप्त की जा सकती है। गांधी दर्शन का प्रमुख आधार सत्य और अहिंसा है। उनके अनुसार सत्य की साधना मनुष्य को ईश्वर के समीप ले जाती है।

अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का विरोध नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति द्वेष या बुराई न रखना है । उन्होंने स्पष्ट किया कि अहिंसा कायरों का हथियार नहीं, बल्कि निर्भीक व्यक्ति का आचरण है ।

गांधी जी ने राजनीति को नैतिकता से जोड़ा । उनके लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं थी, बल्कि समाजसेवा का मार्ग थी । उनका मानना था कि "नैतिकता रहित राजनीति विनाश का मार्ग है ।" इसलिए उन्होंने हर राजनीतिक कार्य में नैतिक आचरण, सत्यनिष्ठा और सार्वजनिक कल्याण को प्रमुख स्थान दिया ।

उनके स्वराज्य का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि आत्मशासन, आत्मनियंत्रण और आत्मनिर्भरता था। उन्होंने ग्राम स्वराज की परिकल्पना की जिसमें प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर, सजग और समाज के प्रति उत्तरदायी हो । उनके अनुसार भारत का वास्तविक उत्थान गाँवों के विकास में निहित है। गांधी जी ने कहा था-"भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है ।"

स्वदेशी और खादी आंदोलन गांधी दर्शन का व्यावहारिक रूप थे। उन्होंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों के प्रयोग द्वारा आर्थिक स्वावलंबन का संदेश दिया। खादी उनके लिए केवल वस्त्र नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, श्रम और स्वाभिमान का प्रतीक थी। गांधी जी ने श्रम को पूजा का स्थान दिया और कहा कि हर व्यक्ति को अपनी जीविका के लिए श्रम करना चाहिए ।

गांधी जी ने समाज में व्याप्त जातिवाद, अस्पृश्यता और लैंगिक असमानता के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं और सबको समान अधिकार प्राप्त हैं । उन्होंने स्त्री को समाज की 'अर्धांगिनी' बताया और उसके सम्मान, शिक्षा तथा आत्मनिर्भरता का समर्थन किया । गांधी जी के लिए स्त्री केवल गृहिणी नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की सहभागी थी। उनके विचारों में धर्म का अर्थ किसी एक पंथ का पालन नहीं, बल्कि सत्य, प्रेम और सेवा की भावना से प्रेरित आचरण था। उन्होंने सर्वधर्म समभाव को अपनाया और कहा कि सभी धर्म एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं । उनका जीवन इसका उदाहरण था, वे गीता, कुरान, बाइबल और धम्मपद सभी का समान आदर करते थे ।

गांधी दर्शन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष अपरिग्रह और सादा जीवन उच्च विचार की भावना है। उन्होंने भोगवादी संस्कृति का विरोध किया और संयम, सादगी तथा आत्मनियंत्रण को जीवन का आदर्श माना है। उनका कहना था कि "पृथ्वी पर सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त है, परंतु किसी एक व्यक्ति के लोभ के लिए नहीं ।" गांधी दर्शन केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं रहा बल्कि इसका प्रभाव विश्व स्तर पर पड़ा है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और डॉ. टोयेनबी जैसे विश्व नेता गांधीजी के विचारों से प्रेरित हुए । उन्होंने गांधीवाद को मानवता, शांति और अहिंसा की वैश्विक विचारधारा के रूप में स्वीकार किया है। नेल्सन मंडेला ने महात्मा गांधी बारे में लिखा है कि -" दमन के सामने गांधी जी का व्यक्तिगत बलिदान और समर्पण का शानदार उदाहरण हमारे देश और विश्व के लिए उनकी अनेक विरासतों में से एक है । उन्होंने हमें दिखाया कि यदि सत्य और न्याय को बुराई पर विजय प्राप्त करनी है तो कारावास का सामना करना आवश्यक है । सहिष्णुता, पारस्परिक सम्मान और एकता के जिन मूल्यों के लिए वे खड़े रहे और जिन पर उन्होंने कार्य किया, उनका हमारे मुक्ति आंदोलन और मेरे स्वयं के चिंतन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे आज भी हमें सुलह और राष्ट्र निर्माण के प्रयासों में प्रेरित करते हैं ।"[1]

मैथिलीशरण गुप्त उन कवियों में अग्रणी थे जिन्होंने गांधी विचारों को काव्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया । उनकी कविताओं में राष्ट्र, समाज और मनुष्य के उत्थान की भावना गांधी दर्शन से प्रेरित है। गुप्ता जी ने अपनी कविताओं में गांधी के विचारोंएक दर्शन का रूप दिया है। उसमें सत्य और अहिंसा, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता, ग्राम स्वराज और श्रम की महिमा, स्त्री सम्मानित, अस्पृश्यता उन्मूलन, धार्मिक सहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता और मानवता, देश भक्ति आदि उल्लेखनीय है ।

गांधीजी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है और अहिंसा उसका मार्ग । गुप्त जी की कविताएँ इस विचार को आत्मसात करती हैं । वे सत्य और नैतिकता को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की नींव मानते हैं-

"यहीं प्रेम है, द्रोह भी है यहीं;
यहीं ज्ञान है, मोह भी है यहीं;
यहीं पुण्य है, पाप भी है यहीं;
यहीं शांति, संताप भी है यहीं।
कहो, क्या तुम्हें आज स्वीकार है?
मनुष्यत्व ही मुक्ति का द्वार है॥"[2]

उनकी दृष्टि में हिंसा मनुष्य की आत्मा को कलुषित करती है, इसलिए वे मनुष्य को करुणा और प्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं । गांधी के 'अहिंसात्मक प्रतिरोध' का साहित्यिक रूप गुप्त की कविता में 'सत्याग्रह' की नैतिक ऊर्जा के रूप में प्रकट होता है ।

गांधीजी ने कहा था "स्वदेशी ही सच्चा देशभक्ति का धर्म है।" मैथिलीशरण गुप्त ने इस विचार को आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के प्रतीक रूप में देखा । 'भारत-भारती' में उन्होंने आह्वान किया है-

"आरंभ जब जो कुछ किया हमने उसे पूरा किया,
था जो असंभव भी उसे संभव हुआ दिखला दिया।
कहना हमारा बस यही था विघ्न और विराम से-
करके हटेंगे हम कि अब मर के हटेंगे काम से॥
यह ठीक है, पश्चिम बहुत ही कर रहा उत्कर्ष है,
पर पूर्व-गुरु उसका यही पुरु वृद्ध भारतवर्ष है।
जाकर विवेकानंद-सम कुछ साधु जन इस देश से,
करते उसे कृतकृत्य हैं अभी अतुल उपदेश से ॥ "[3]

उनकी कविताओं में स्वदेशी वस्त्र, देशी उत्पादन और श्रम की महत्ता को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का माध्यम बताया गया है । गांधी के चरखा आंदोलन की आत्मा गुप्त की कविता में आत्मनिर्भरता के गीत के रूप में गूँजती है । गांधीजी का विश्वास था कि भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है । गुप्त जी ने भी ग्राम्य जीवन को भारतीय संस्कृति का केंद्र माना । 'भारत-भारती' में वे कहते हैं-

"ग्रामों में ही है भारत की आत्मा,
ग्राम्य जीवन ही इसका प्राण है ।"[4]

उन्होंने गाँवों की सादगी, श्रमशीलता और आत्मनिर्भरता का आदर्श चित्रण किया। गांधी का 'ग्राम स्वराज' गुप्त की दृष्टि में केवल राजनीतिक स्वराज नहीं, बल्कि नैतिक और आर्थिक स्वराज था - जहाँ प्रत्येक व्यक्ति श्रम से जीवनयापन करे और समाज के हित में कार्य करे ।

गांधीजी ने स्त्रियों को स्वतंत्रता संग्राम की अग्रणी शक्ति माना । मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी कविताओं में नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण की आलोचना की । उनकी प्रसिद्ध कविता 'नारी' में उन्होंने स्त्री के प्रति सहानुभूति और सम्मान का स्वर दिया -

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ।"[5]

यह व्यथा मात्र नहीं, सामाजिक चेतना का उद्घोष है । 'साकेत' की ऊर्मिला और 'यशोधरा' की नायिका नारी की शक्ति, त्याग और आत्मसम्मान की मूर्तियाँ हैं। यह वही दृष्टि है जो गांधी के नारी सम्मान और समान अधिकार के विचार से मेल खाती है ।

गुप्त जी भारत की प्राचीन नारी की महिमा का वर्णन करते हुए कहते है कि देश में केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी उतनी ही गौरवशाली और योग्य थीं । वे लिखते है कि-

"केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत को गर्व था,
गृह-देवियाँ भी थीं हमारी देवियाँ ही सर्वथा।
था अत्रि-अनुसूया-सदृश गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,
दांपत्य में वह सौख्य था जो सौख्य था अपवर्ग में ॥
निज स्वामियों के कार्य में सम भाग जो लेतीं न वे,
अनुरागपूर्वक योग जो उसमें सदा देतीं न वे,
तो फिर कहातीं किस तरह 'अर्द्धांगिनी' सुकुमारियाँ?
तात्पर्य यह–अनुरूप ही थीं नरवरों के नारियाँ॥"[6]

यहाँ गुप्त जीमानते है कि भारतीय नारी का स्थान सदैव उच्च रहा है- वह न केवल गृह की शोभा थी, बल्कि पति की सच्ची सहभागी और जीवनसंगिनी भी थी।

गांधीजी ने कहा था कि "अस्पृश्यता पाप है ।" मैथिलीशरण गुप्त ने भी इसे भारतीय समाज के नैतिक पतन का कारण माना । 'भारत माता का मन्दिर यह ' में उन्होंने हरिजन और दलितों के प्रति करुणा और समानता का संदेश दिया -

"भारत माता का मन्दिर यह
सबका शिव कल्याण यहाँ है
जाति-धर्म या सम्प्रदाय का,
सबका स्वागत, सबका आदर
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
समता का संवाद जहाँ
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका सम सम्मान यहाँ।
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ ।"[7]

यह काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त की उदार मानवतावादी और राष्ट्रवादी दृष्टि का सशक्त उदाहरण है। कवि 'भारत माता के मन्दिर' की कल्पना एक ऐसे पावन स्थल के रूप में करता है जहाँ किसी भी प्रकार का जाति, धर्म या सम्प्रदायगत भेद नहीं है और प्रत्येक व्यक्ति का समान रूप से स्वागत और आदर किया जाता है। राम, रहीम, बुद्ध और ईसा जैसे विभिन्न धर्मों के महान प्रतीकों का एक साथ उल्लेख कवि की सर्वधर्म समभाव की भावना को प्रकट करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारत की संस्कृति विविधताओं में एकता का आदर्श प्रस्तुत करती है । कविता में 'शिव' शब्द का प्रयोग मंगल, कल्याण और मानव-हित के व्यापक अर्थ में हुआ है, जहाँ सभी को समान रूप से 'प्रसाद' प्राप्त होता है। कवि के अनुसार यह मन्दिर केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि एक नैतिक और सांस्कृतिक केंद्र है, जहाँ विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों के गुणों का सम्मान और ज्ञान प्राप्त होता है। 'समता का संवाद' और 'सबका

सम सम्मान' जैसी पंक्तियाँ सामाजिक समानता, न्याय और बंधुत्व के आदर्श को सुदृढ़ करती हैं तथा भेदभाव, छुआछूत और असमानता का स्पष्ट विरोध करती हैं । कविता का भाव यह है कि भारत तभी सशक्त और पवित्र बन सकता है जब उसके नागरिक आपसी द्वेष और भेदभाव को त्यागकर समान दृष्टि, सहिष्णुता और मानवीय करुणा को अपनाएँ। इस प्रकार यह काव्यांश भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा-समता, सहअस्तित्व और मानवता-का प्रभावशाली काव्यात्मक रूप प्रस्तुत करता है। गुप्त जी की दृष्टि में राष्ट्र तभी सशक्त हो सकता है जब समाज में भेदभाव का अंत हो और प्रत्येक व्यक्ति को समान सम्मान मिले ।

गांधीजी की तरह गुप्त जी का भी विश्वास था कि सभी धर्म समान सत्य के मार्ग हैं । उनकी कविता 'भारत माता का मन्दिर यह' में धर्म के नाम पर विभाजन की तीव्र आलोचना है । वे लिखते है कि -

"नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बनें,
सबको मित्र बना लें हम ।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम। ।"[8]

यह काव्यांश गहन मानवीय संवेदनाओं और उदात्त जीवन-मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति है। कवि आरंभ में ही यह स्पष्ट कर देता है कि ऐसी बुद्धि निरर्थक है जो बैर, द्वेष और वैमनस्य को बढ़ावा दे; उसके स्थान पर वह प्रेम से उत्पन्न उस उन्माद को स्वीकार करता है जो मानव को उदार, करुणामय और परोपकारी बनाता है। कविता में 'शिव' शब्द का प्रयोग केवल देवत्व के लिए नहीं, बल्कि सर्वमंगल और कल्याण की भावना के रूप में हुआ है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से प्रसाद प्राप्त होता है। कवि बाह्य धार्मिक कर्मकांडों और तीर्थयात्राओं से ऊपर उठकर मानव हृदय को ही सबसे बड़ा तीर्थ घोषित करता है और उसे पवित्र करने का आह्वान करता है। 'अजातशत्रु' बनने की कल्पना के माध्यम से वह ऐसे समाज की परिकल्पना करता है जहाँ शत्रुता का स्थान मित्रता ले ले और सभी मनुष्य आपसी सौहार्द के साथ जीवन व्यतीत करें। आगे कवि जीवन को एक कैनवास की तरह देखता है, जिस पर मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं और कर्मों की रेखाओं से मन का चित्र बनाता है। अनेक आदर्शों को आत्मसात कर एक सुदृढ़ और नैतिक चरित्र के निर्माण की प्रेरणा देकर कवि आत्म-निर्माण और नैतिक उत्थान को जीवन का लक्ष्य मानता है। इस प्रकार यह काव्यांश व्यक्ति और समाज दोनों के लिए प्रेम, सद्भाव, आदर्श और चरित्र-निर्माण का सशक्त संदेश देता है।

उनके लिए धर्म का अर्थ था - मनुष्य के भीतर की मानवता। गांधी के "सर्व धर्म समभाव" का काव्य रूप गुप्त की रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देता है ।

गांधी के आदर्शों का अंतिम लक्ष्य 'राष्ट्र और मानवता की सेवा' था। मैथिलीशरण गुप्त ने भी कविता को देशसेवा का माध्यम बनाया। 'भारत-भारती' का प्रत्येक पद राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना से ओतप्रोत है। उनकी कविताएँ केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि जनजागरण का साधन बनीं -

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर यह समस्याएँ सभी ।"[9]

यह आत्ममंथन का स्वर गांधी युगीन भारत की आत्मा का प्रतिनिधि है । गांधी का मानते थे कि पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधना, जहाँ सभी नागरिक जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र या संस्कृति के भेदभाव को भूलकर एक भारतीय के रूप में सोचें और कार्य करें । जब देश के लोग मिलजुलकर समान उद्देश्य के लिए काम करते हैं, तभी राष्ट्र सशक्त बनता है ।

**निष्कर्ष :**

मैथिलीशरण गुप्त का काव्य गांधी दर्शन का काव्यात्मक रूप है। उनकी कविताओं में गांधी के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों का जीवंत रूप मिलता है । उन्होंने कविता को केवल सौंदर्य या मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सत्य, सेवा, करुणा और देशप्रेम का साधन बनाया ।'भारत-भारती' भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की नैतिक आत्मा है, जबकि 'साकेत' और 'यशोधरा' मानव मूल्य और त्याग की आदर्श गाथाएँ हैं । गुप्त जी का साहित्य गांधीजी की उस भावना को साकार करता है जिसमें "सत्य में ईश्वर है, और प्रेम में मनुष्य की मुक्ति।" उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से यह बताया कि सत्य और अहिंसा केवल राजनीतिक नारे नहीं, बल्कि जीवन के शाश्वत मूल्य हैं। उनके लिए सत्य आत्मा का स्वर है और अहिंसा उसका आचरण। यही कारण है कि गुप्त जी का काव्य भारतीय समाज में नैतिक पुनर्जागरण और मानवीय करुणा का संदेश देता है। उन्होंने काव्य को समाज सुधार और आत्मबोध का साधन बनाया तथा गांधी जी के विचारों को लोकमंगल की दिशा में

रूपांतरित किया। इस प्रकार, गुप्त जी की रचनाओं में सत्य और अहिंसा का दर्शन भारतीय जीवन की नैतिक धारा और मानवीय संवेदना का प्रतीक बनकर उभरता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. https://www.mkgandhi.org/articles/speechnm.php#:~:text=Gandhi'
2. मैथिलीशरण गुप्त - मंगल-घट, साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी) संस्करण : 1994, पृष्ठ-282
3. मैथिलीशरण गुप्त - भारत भारती,साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी संस्करण : 1984, पृष्ठ -16
4. मैथिलीशरण गुप्त - भारत भारती,साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी संस्करण : 1984, पृष्ठ -34
5. मैथिलीशरण गुप्त - साकेत, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली,1990, पृ. सं- 45
6. मैथिलीशरण गुप्त - भारत भारती, साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी संस्करण : 1984, पृष्ठ -11
7. मैथिलीशरण गुप्त - 'भारत माता का मन्दिर यह', राजकमल प्रकाशन संस्करण : 1997, पृष्ठ -07
8. मैथिलीशरण गुप्त - 'भारत माता का मन्दिर यह', राजकमल प्रकाशन संस्करण : 1997, पृष्ठ -09
9. मैथिलीशरण गुप्त - भारत भारती, साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी संस्करण : 1984, पृष्ठ -5